



राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधारित आदिवासी विद्यार्थियों की शिक्षा में जीवन-कौशल एवं सामाजिक समर्थन द्वारा शैक्षिक उपलब्धि संवर्धन का अध्ययन

राजेश्वरी गर्ग, पीएच-डी, पुष्पलता भगत, शोधार्थी, शिक्षा विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Authors

राजेश्वरी गर्ग, पीएच-डी
पुष्पलता भगत, शोधार्थी

E-mail : rajeshwarichoubey@rediffmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/07/2026
Revised on : 07/09/2026
Accepted on : 16/09/2026
Overall Similarity : 00% on 08/09/2026



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: Sep 8, 2026 (01:48 PM)
Matches: 0 / 3567 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found,
your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code



शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के व्यापक परिप्रेक्ष्य में आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर जीवन-कौशल एवं सामाजिक समर्थन के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता, पहुँच एवं निरंतरता से जुड़ी अनेक चुनौतियाँ आज भी विद्यमान हैं, जिनमें भाषायी बाधा, भौगोलिक दुर्गमता, आर्थिक विपन्नता, विद्यालय त्याग की उच्च दर तथा सामाजिक-सांस्कृतिक विसंगति प्रमुख हैं। ऐसी परिस्थितियों में जीवन-कौशल आधारित शिक्षा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, समस्या-समाधान क्षमता, संवेगात्मक स्थिरता तथा अनुकूलन क्षमता का विकास करके उन्हें शैक्षिक एवं सामाजिक चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाती है। इसके समानांतर परिवार, विद्यालय, समुदाय एवं सहपाठियों से प्राप्त सामाजिक समर्थन विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक सुरक्षा, अभिप्रेरणा तथा विद्यालय के प्रति सकारात्मक जुड़ाव को सुदृढ़ करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समग्र, बहुविषयक, अनुभवाधारित एवं समावेशी शिक्षा पर बल देते हुए जीवन-कौशल विकास तथा सामाजिक-भावनात्मक अधिगम को पाठ्यचर्या का अभिन्न अंग मानती है, जिससे वंचित एवं हाशिये पर स्थित समुदायों, विशेष रूप से आदिवासी विद्यार्थियों, के लिए समता एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण अवसर उत्पन्न होते हैं। यह पत्र सैद्धांतिक विश्लेषण के आधार पर यह प्रतिपादित करता है कि जीवन-कौशल एवं सामाजिक समर्थन का समन्वित क्रियान्वयन आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय संवर्धन ला सकता है, बशर्ते इसे स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भ, बहुभाषिक शिक्षण-प्रणाली तथा समुदाय-केंद्रित सहभागिता के साथ क्रियान्वित किया जाए।

मुख्य शब्द

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, आदिवासी विद्यार्थी, जीवन-कौशल, सामाजिक समर्थन, शैक्षिक उपलब्धि.

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है, परंतु भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में विभिन्न सामाजिक समूहों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की समान पहुँच सुनिश्चित करना आज भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य बना हुआ है। आदिवासी समुदाय, जो भारत की जनसंख्या का उल्लेखनीय भाग हैं, ऐतिहासिक रूप से शिक्षा के मुख्यधारा तंत्र से अपेक्षाकृत दूर रहे हैं। भौगोलिक दुर्गमता, आर्थिक सीमाएँ, भाषायी विविधता एवं सांस्कृतिक विशिष्टता जैसे कारकों ने आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक यात्रा को जटिल बना दिया है। इस पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रादुर्भाव एक महत्वपूर्ण नीतिगत परिवर्तन के रूप में देखा जाता है, जो शिक्षा को केवल साक्षरता एवं अंक-ज्ञान तक सीमित न रखकर समग्र व्यक्तित्व विकास, जीवन-कौशल संवर्धन तथा सामाजिक-भावनात्मक कल्याण की दिशा में उन्मुख करती है। जीवन-कौशल जैसे निर्णय-क्षमता, समस्या-समाधान, संप्रेषण, सहानुभूति एवं संवेगात्मक प्रबंधन विद्यार्थियों को न केवल शैक्षिक परिस्थितियों बल्कि जीवन की वास्तविक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाते हैं। इसी प्रकार परिवार, विद्यालय एवं समुदाय द्वारा प्रदत्त सामाजिक समर्थन विद्यार्थी के आत्मविश्वास, प्रेरणा एवं विद्यालय के प्रति जुड़ाव को सुदृढ़ करता है। आदिवासी विद्यार्थियों के संदर्भ में जब ये दोनों तत्त्व, जीवन-कौशल एवं सामाजिक समर्थन समुचित रूप से एक साथ कार्य करते हैं, तो शैक्षिक उपलब्धि में संवर्धन की प्रबल संभावना बनती है। प्रस्तुत अध्ययन इसी अंतर्संबंध को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रकाश में समझने का प्रयास करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और आदिवासी शिक्षा का परिप्रेक्ष्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जिसे केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा जुलाई 2020 में स्वीकृति प्रदान की गई, वर्ष 1986 की शिक्षा नीति के स्थान पर लागू की गई एक व्यापक नीतिगत दस्तावेज है। यह नीति शिक्षा को समावेशी, समतामूलक एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के साथ-साथ भारत को एक जीवंत ज्ञान समाज में परिवर्तित करने की परिकल्पना प्रस्तुत करती है। नीति में सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों की श्रेणी में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है तथा उनके लिए लक्षित हस्तक्षेप, विशेष शिक्षा क्षेत्र बहुभाषिक शिक्षण एवं मातृभाषा आधारित प्रारंभिक शिक्षा जैसे प्रावधानों की अनुशंसा की गई है। नीति यह स्वीकार करती है कि आदिवासी क्षेत्रों में भाषायी असंगति, विद्यालयों की न्यून उपलब्धता तथा सामाजिक-सांस्कृतिक कारक शिक्षा तक पहुँच एवं उसकी निरंतरता में बाधक रहे हैं। इस दृष्टि से नीति में कक्षा पाँच तक तथा यथासंभव कक्षा आठ तक मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा में शिक्षण के प्रावधान, आवासीय विद्यालयों एवं छात्रावासों के सुदृढीकरण तथा सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने जैसे उपाय सम्मिलित किए गए हैं। इसके साथ ही नीति समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा, अनुभवाधारित अधिगम तथा जीवन-कौशल एवं मूल्य-शिक्षा को पाठ्यचर्या में एकीकृत करने पर बल देती है, जो आदिवासी विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान एवं आत्मसम्मान को सुरक्षित रखते हुए उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

आदिवासी विद्यार्थियों की शिक्षारू वर्तमान स्थिति एवं प्रमुख चुनौतियाँ

वर्तमान समय में सरकारी योजनाओं एवं विशेष प्रावधानों के बावजूद आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति राष्ट्रीय औसत की तुलना में अपेक्षाकृत निम्न स्तर पर बनी हुई है। नामांकन दर में क्रमिक सुधार हुआ है, परंतु माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यालय त्याग की दर अभी भी चिंताजनक है। इसके प्रमुख कारणों में विद्यालय की भौगोलिक दूरी, परिवहन एवं अवसरचयन की कमी, शिक्षकों की अनुपस्थिति अथवा अपर्याप्त प्रशिक्षण, तथा शिक्षण माध्यम एवं मातृभाषा के बीच का अंतराल सम्मिलित हैं। अनेक आदिवासी विद्यार्थी ऐसी भाषा में शिक्षा ग्रहण करने हेतु बाध्य होते हैं जो उनकी गृह-भाषा से भिन्न होती है, जिससे प्रारंभिक अधिगम में कठिनाई उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त आर्थिक विपन्नता के कारण बाल श्रम, प्रवासन तथा पारिवारिक उत्तरदायित्वों में सहभागिता विद्यार्थियों को विद्यालय से दूर करती है। सामाजिक स्तर पर भेदभाव एवं सांस्कृतिक अलगाव की अनुभूति भी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं विद्यालय के प्रति जुड़ाव को प्रभावित करती है। इन समस्त कारकों के संयुक्त प्रभाव से आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अधिगम स्तर एवं उच्च शिक्षा तक पहुँच अपेक्षाकृत सीमित रह जाती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि केवल पहुँच बढ़ाना पर्याप्त नहीं, अपितु गुणात्मक एवं सहयोगात्मक हस्तक्षेप आवश्यक हैं।

जीवन-कौशल की अवधारणा एवं शैक्षिक महत्त्व

जीवन-कौशल से आशय उन मनोसामाजिक क्षमताओं से है जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की माँगों एवं चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने योग्य बनाती हैं। इनमें आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, संप्रेषण कौशल, अंतर्व्यक्तिक संबंध-निर्वहन, समालोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मक चिंतन, निर्णय-क्षमता, समस्या-समाधान, संवेगों का प्रबंधन तथा तनाव-प्रबंधन जैसे घटक सम्मिलित हैं। शैक्षिक दृष्टिकोण से जीवन-कौशल केवल पाठ्येतर गतिविधि नहीं, अपितु समग्र विकास का अनिवार्य अंग माने

जाते हैं, क्योंकि ये विद्यार्थी की शैक्षणिक सफलता, मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक अनुकूलन तीनों को प्रभावित करते हैं। जीवन-कौशल विद्यार्थियों में आत्मविश्वास एवं आत्म-नियमन की भावना विकसित करते हैं, जिससे वे कठिन परिस्थितियों में भी अध्ययन के प्रति निरंतरता बनाए रखने में सक्षम होते हैं। इसके अतिरिक्त ये कौशल विद्यार्थियों को पारस्परिक सहयोग, टीम-कार्य तथा संघर्ष-समाधान की क्षमता प्रदान करते हैं, जो कक्षा-कक्ष के वातावरण एवं सहपाठी संबंधों को सकारात्मक बनाते हैं। वैश्विक स्तर पर भी शिक्षाविद् जीवन-कौशल शिक्षा को 21वीं सदी की दक्षताओं का केंद्रीय अंग मानते हैं, जो विद्यार्थियों को न केवल परीक्षा-उन्मुख उपलब्धि बल्कि दीर्घकालिक जीवन-सफलता हेतु तैयार करता है।

आदिवासी विद्यार्थियों के संदर्भ में जीवन-कौशल की भूमिका

आदिवासी विद्यार्थियों के लिए जीवन-कौशल का महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि उन्हें प्रायः सांस्कृतिक संक्रमण, भाषायी असंगति एवं सामाजिक भेदभाव जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में समस्या-समाधान एवं अनुकूलन क्षमता जैसे जीवन-कौशल विद्यार्थियों को नवीन विद्यालयी परिवेश, भिन्न भाषा-माध्यम तथा शहरी अथवा अर्ध-शहरी सामाजिक संरचना के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करते हैं। आत्म-जागरूकता एवं आत्म-सम्मान से संबंधित कौशल विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति गर्व की भावना बनाए रखते हुए मुख्यधारा शिक्षा-तंत्र में आत्मविश्वासपूर्वक सहभागिता करने योग्य बनाते हैं। संवेगात्मक प्रबंधन कौशल विद्यार्थियों को सामाजिक भेदभाव अथवा उपेक्षा की स्थिति में उत्पन्न होने वाले तनाव एवं हताशा को नियंत्रित करने में सहायता प्रदान करते हैं, जिससे विद्यालय-त्याग की प्रवृत्ति में कमी आ सकती है। इसके अतिरिक्त निर्णय-क्षमता एवं लक्ष्य-निर्धारण कौशल विद्यार्थियों को दीर्घकालिक शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के प्रति उन्मुख करते हैं, जो परिवार में शिक्षा के प्रति सीमित अभिप्रेरणा की स्थिति में विशेष रूप से महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इस प्रकार जीवन-कौशल आदिवासी विद्यार्थियों के लिए केवल पूरक नहीं, अपितु उनकी शैक्षिक सततता एवं सफलता का एक आधारभूत स्तंभ बन जाते हैं।

सामाजिक समर्थन की अवधारणा एवं उसके प्रमुख आयाम

सामाजिक समर्थन से तात्पर्य उन भावनात्मक, सूचनात्मक एवं भौतिक संसाधनों से है जो व्यक्ति को उसके सामाजिक संबंधों जैसे परिवार, मित्र, विद्यालय एवं समुदाय से प्राप्त होते हैं और जो उसे तनावपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम बनाते हैं। सामान्यतः सामाजिक समर्थन के तीन प्रमुख आयाम माने जाते हैं भावनात्मक समर्थन, जिसमें सहानुभूति, देखभाल एवं प्रोत्साहन सम्मिलित है; सूचनात्मक समर्थन, जिसमें मार्गदर्शन, सलाह एवं आवश्यक जानकारी प्रदान करना सम्मिलित है; तथा साधनात्मक अथवा भौतिक समर्थन, जिसमें प्रत्यक्ष सहायता जैसे शिक्षण-सामग्री, आर्थिक सहयोग अथवा समय की उपलब्धता सम्मिलित है। विद्यार्थियों के संदर्भ में यह समर्थन मुख्यतः चार स्रोतों से प्राप्त होता है परिवार, शिक्षक एवं विद्यालय-तंत्र, सहपाठी समूह तथा व्यापक समुदाय। शोध साहित्य में यह सर्वमान्य है कि पर्याप्त सामाजिक समर्थन विद्यार्थियों में सुरक्षा की भावना, आत्म-मूल्य तथा विद्यालय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति को सुदृढ़ करता है। इसके विपरीत सामाजिक समर्थन के अभाव में विद्यार्थी अलगाव, चिंता एवं अभिप्रेरणा की कमी का अनुभव कर सकते हैं, जो अंततः उनकी शैक्षिक भागीदारी एवं उपलब्धि को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

आदिवासी विद्यार्थियों की शिक्षा में सामाजिक समर्थन की भूमिका

आदिवासी विद्यार्थियों के लिए सामाजिक समर्थन का महत्त्व विशेष रूप से इसलिए अधिक है क्योंकि वे प्रायः परिवार से दूर आवासीय विद्यालयों अथवा छात्रावासों में शिक्षा प्राप्त करते हैं, जिससे उन्हें परिचित सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से पृथक् होना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षकों एवं छात्रावास-कर्मियों द्वारा प्रदत्त भावनात्मक समर्थन विद्यार्थियों की सुरक्षा एवं अपनत्व की भावना को सुदृढ़ करता है। सहपाठी समूह से प्राप्त समर्थन नवीन परिवेश में सामाजिक समायोजन को सरल बनाता है, जबकि परिवार का प्रोत्साहन, यद्यपि प्रायः सीमित संसाधनों के कारण सीमित रूप में उपलब्ध होता है, विद्यार्थी की शिक्षा के प्रति निरंतरता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक बना रहता है। समुदाय-स्तर पर स्थानीय अगुआओं, सामुदायिक संगठनों एवं गैर-सरकारी संस्थाओं की सहभागिता भी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण निर्मित करने में सहायक होती है। जहाँ विद्यालय-तंत्र सांस्कृतिक संवेदनशीलता के साथ सामाजिक समर्थन प्रदान करता है, वहाँ आदिवासी विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति जुड़ाव, नियमितता तथा शैक्षिक अभिप्रेरणा में उल्लेखनीय वृद्धि देखी जाती है। इस प्रकार सामाजिक समर्थन आदिवासी विद्यार्थियों के लिए सुरक्षात्मक कवच के रूप में कार्य करता है, जो प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रभाव को न्यून करने में सहायक सिद्ध होता है।

जीवन-कौशल एवं शैक्षिक उपलब्धि का संबंध

जीवन-कौशल एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध को अनेक शैक्षिक मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में रेखांकित किया गया है। समस्या-समाधान एवं समालोचनात्मक चिंतन कौशल विद्यार्थियों को जटिल अकादमिक अवधारणाओं को समझने तथा उन्हें व्यावहारिक परिस्थितियों में लागू करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे उनकी संप्रत्यय-आधारित समझ सुदृढ़ होती है। समय-प्रबंधन एवं आत्म-नियमन कौशल अध्ययन की नियमितता एवं परीक्षा-पूर्व तैयारी में सहायक सिद्ध होते हैं। संवेगात्मक प्रबंधन कौशल परीक्षा-चिंता तथा शैक्षणिक तनाव को नियंत्रित करने में सहायता करते हैं, जिससे विद्यार्थी की निष्पादन क्षमता प्रभावित नहीं होती। इसके अतिरिक्त संप्रेषण कौशल कक्षा-कक्ष में सक्रिय सहभागिता, प्रश्न पूछने तथा समूह-चर्चा में योगदान देने की प्रवृत्ति को बढ़ाते हैं, जो अधिगम की गहनता को सुदृढ़ करता है। सम्मिलित रूप से यह कहा जा सकता है कि उच्च जीवन-कौशल स्तर वाले विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक चुनौतियों का प्रभावी सामना करते हैं, अपितु दीर्घकालिक रूप से उच्चतर शैक्षिक उपलब्धि, कम अनुपस्थिति तथा विद्यालय-त्याग की न्यून प्रवृत्ति भी प्रदर्शित करते हैं।

सामाजिक समर्थन एवं शैक्षिक उपलब्धि का संबंध

सामाजिक समर्थन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध को व्याख्यायित करने वाले सैद्धांतिक प्रारूपों में यह स्वीकार किया गया है कि पर्याप्त सामाजिक समर्थन विद्यार्थी की मनोवैज्ञानिक सुरक्षा एवं आत्म-प्रत्यय को सुदृढ़ करके अप्रत्यक्ष रूप से उसकी अकादमिक निष्पादन क्षमता को प्रभावित करता है। परिवार से प्राप्त प्रोत्साहन विद्यार्थी में शिक्षा के प्रति सकारात्मक मूल्य-बोध विकसित करता है, जबकि शिक्षकों का सहयोगात्मक व्यवहार कक्षा-कक्ष में सहभागिता तथा अधिगम के प्रति उत्साह को बढ़ाता है। सहपाठी समर्थन विद्यार्थियों में सामूहिक अध्ययन, विचार-विनिमय तथा पारस्परिक सहायता की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है, जो अकादमिक निष्पादन में सुधार लाने में सहायक होता है। इसके विपरीत सामाजिक समर्थन के अभाव में विद्यार्थी को अकेलापन, तनाव एवं अभिप्रेरणा की कमी का सामना करना पड़ सकता है, जो अंततः अनियमितता तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि के रूप में परिलक्षित होता है। अतः यह स्पष्ट है कि सामाजिक समर्थन केवल भावनात्मक संबल प्रदान नहीं करता, अपितु यह विद्यार्थी की शैक्षिक यात्रा की निरंतरता एवं गुणवत्ता को भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

जीवन-कौशल, सामाजिक समर्थन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अंतर्संबंध

जीवन-कौशल एवं सामाजिक समर्थन को पृथक-पृथक कारकों के रूप में देखने के स्थान पर इन्हें एक-दूसरे के पूरक एवं परस्पर सुदृढ़ करने वाले तत्त्वों के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है। जहाँ सामाजिक समर्थन विद्यार्थी को एक सुरक्षित एवं प्रोत्साहनकारी परिवेश प्रदान करता है, वहीं जीवन-कौशल विद्यार्थी को उस परिवेश का प्रभावी उपयोग करने तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सक्रिय बने रहने की आंतरिक क्षमता प्रदान करते हैं। उदाहरणस्वरूप, यदि किसी आदिवासी विद्यार्थी को शिक्षकों एवं सहपाठियों से सुदृढ़ सामाजिक समर्थन प्राप्त है, परंतु उसमें संवेगात्मक प्रबंधन अथवा समस्या-समाधान जैसे जीवन-कौशल का अभाव है, तो वह उपलब्धि समर्थन का पूर्ण लाभ नहीं उठा पाएगा। इसके विपरीत उच्च जीवन-कौशल के बावजूद सामाजिक समर्थन के अभाव में विद्यार्थी को अपेक्षित प्रोत्साहन एवं संसाधन उपलब्ध नहीं हो पाएँगे। अतः दोनों तत्त्वों की संयुक्त उपस्थिति ही शैक्षिक उपलब्धि के संवर्धन हेतु सर्वाधिक प्रभावी सिद्ध होती है। यह अंतर्संबंध एक चक्रीय प्रक्रिया के रूप में भी कार्य करता है सुदृढ़ सामाजिक समर्थन जीवन-कौशल के विकास को प्रोत्साहित करता है, तथा विकसित जीवन-कौशल विद्यार्थी को सामाजिक संबंधों को अधिक प्रभावी ढंग से बनाए रखने योग्य बनाते हैं, जिससे समर्थन का दायरा और सुदृढ़ होता जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जीवन-कौशल एवं सामाजिक समर्थन संबंधी प्रावधान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जीवन-कौशल एवं सामाजिक-भावनात्मक विकास को शिक्षा के केंद्रीय उद्देश्यों में सम्मिलित किया गया है। नीति निम्नलिखित प्रमुख प्रावधानों के माध्यम से इस दिशा में मार्ग प्रशस्त करती है:

1. पाठ्यचर्या को समग्र एवं बहुविषयक बनाते हुए 21वीं सदी की दक्षताओं जैसे समालोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, संप्रेषण एवं सहयोग को अनिवार्य अंग के रूप में सम्मिलित करना।
2. प्रत्येक स्तर पर मूल्य-शिक्षा, नैतिक तर्कशक्ति तथा भावनात्मक कल्याण से संबंधित विषय-वस्तु को पाठ्यक्रम में एकीकृत करना।
3. परामर्श एवं मार्गदर्शन (Counselling) सेवाओं को विद्यालयी तंत्र का नियमित हिस्सा बनाने की अनुशंसा, जिससे विद्यार्थियों को मनोसामाजिक सहयोग प्राप्त हो सके।

4. शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समावेशी शिक्षाशास्त्र एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम से संबंधित मॉड्यूल सम्मिलित करना, ताकि शिक्षक विद्यार्थियों को प्रभावी सामाजिक समर्थन प्रदान कर सकें।
5. विद्यालय परिसरों को सुरक्षित, समावेशी एवं समता-आधारित बनाने पर बल, जिससे सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों के विद्यार्थियों को अपनेपन की अनुभूति हो।
6. सामुदायिक एवं अभिभावक सहभागिता को प्रोत्साहित करना, ताकि विद्यालय एवं परिवार के मध्य सतत संवाद तथा समर्थन-तंत्र विकसित हो सके।

इन प्रावधानों से स्पष्ट होता है कि नीति जीवन-कौशल एवं सामाजिक समर्थन को परस्पर सम्बद्ध रणनीतियों के रूप में प्रस्तुत करती है, जो विशेष रूप से वंचित एवं हाशिये पर स्थित समुदायों की शैक्षिक भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि संवर्धन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों को आदिवासी संदर्भ में प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने हेतु कुछ व्यावहारिक दिशाओं पर विचार आवश्यक है। सर्वप्रथम, जीवन-कौशल शिक्षा को स्थानीय भाषा, सांस्कृतिक प्रतीकों एवं परंपरागत ज्ञान-प्रणालियों के साथ जोड़कर प्रस्तुत करने से विद्यार्थियों की सहभागिता एवं समझ अधिक सुदृढ़ होगी। द्वितीयतः, आवासीय विद्यालयों एवं छात्रावासों में प्रशिक्षित परामर्शदाताओं तथा संवेदनशील शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने से विद्यार्थियों को नियमित भावनात्मक एवं सूचनात्मक समर्थन प्राप्त हो सकेगा। तृतीयतः, सहपाठी-आधारित मार्गदर्शन (Peer Mentoring) एवं वरिष्ठ विद्यार्थियों द्वारा कनिष्ठ विद्यार्थियों के मार्गदर्शन जैसी व्यवस्थाएँ सामाजिक समर्थन के अनौपचारिक किंतु प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य कर सकती हैं। चतुर्थतः, विद्यालय एवं समुदाय के मध्य सतत संवाद-तंत्र स्थापित करना, जिसमें स्थानीय अगुआओं एवं अभिभावकों की सक्रिय सहभागिता हो, विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति सामुदायिक स्वामित्व की भावना विकसित करेगा। अंततः, आवधिक मूल्यांकन एवं प्रतिपुष्टि तंत्र के माध्यम से यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि जीवन-कौशल एवं सामाजिक समर्थन संबंधी हस्तक्षेप वास्तविक रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, उपस्थिति तथा विद्यालय-निरंतरता पर सकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। इस प्रकार के समन्वित, संदर्भ-संवेदनशील एवं सहभागितापूर्ण दृष्टिकोण के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की परिकल्पना को आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उन्नति में सार्थक रूप से परिणत किया जा सकता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के परिप्रेक्ष्य में यह तथ्य अत्यंत स्पष्ट हो जाता है कि आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को संवर्धित करने के लिए जीवन-कौशल (Life Skills) और सामाजिक समर्थन (Social Support) दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण एवं परस्पर पूरक तत्त्व हैं। जहाँ एक ओर जीवन-कौशल विद्यार्थी की आंतरिक क्षमता, संज्ञानात्मक लचीलेपन, आत्म-जागरूति और बाह्य चुनौतियों से निपटने की अनुकूलनशीलता को सुदृढ़ करते हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक समर्थन उसे एक सुरक्षित, सहानुभूतिपूर्ण एवं प्रेरणादायी बाह्य परिवेश प्रदान करता है, जो उसके समग्र विकास के लिए अनिवार्य है। आदिवासी समुदायों की अपनी एक विशिष्ट सांस्कृतिक, भौगोलिक और भाषाई पहचान होती है। जब ये विद्यार्थी पारंपरिक और कभी-कभी बाहरी औपचारिक शिक्षा प्रणाली में प्रवेश करते हैं, तो उन्हें तीव्र सांस्कृतिक संक्रमण और सामाजिक अलगाव का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में, केवल किताबी ज्ञान उनकी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता। उन्हें ऐसे जीवन-कौशल से लैस करने की आवश्यकता होती है जो उनमें आत्मविश्वास जगाएं, निर्णय लेने की क्षमता विकसित करें और उनके भीतर छिपी हुई झिझक या हीनभावना को दूर करें। समस्या-समाधान, प्रभावी संचार, तनाव प्रबंधन और आलोचनात्मक सोच जैसे जीवन-कौशल आदिवासी युवाओं को आधुनिक दुनिया के प्रतिस्पर्धी माहौल में टिके रहने और आगे बढ़ने का संबल प्रदान करते हैं। दूसरी ओर, केवल आंतरिक क्षमताएं तब तक पूर्ण परिणाम नहीं दे सकतीं जब तक कि उन्हें बाहरी स्तर पर एक मजबूत सामाजिक समर्थन (Social Support) प्राप्त न हो। सामाजिक समर्थन के विभिन्न आयाम जैसे परिवार का भावनात्मक संबल, शिक्षकों का संवेदनशील मार्गदर्शन, समवयस्क (Peer) समूह का सहयोगात्मक रवैया और स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी विद्यार्थियों के लिए एक सुरक्षा कवच का कार्य करते हैं। जब आदिवासी बच्चों को यह अहसास होता है कि उनके माता-पिता, शिक्षक और पूरा समाज उनकी सफलता के पीछे खड़ा है, तो उनकी आंतरिक प्रेरणा कई गुना बढ़ जाती है। यह समर्थन उन्हें विद्यालयी जीवन के दौरान आने वाली आर्थिक, सामाजिक और मानसिक बाधाओं से लड़ने की शक्ति देता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इन दोनों आयामों जीवन-कौशल और सामाजिक समर्थन को शिक्षा के केंद्र में स्थापित करते हुए एक ऐसा दूरदर्शी नीतिगत ढांचा प्रस्तुत करती है, जो आदिवासी विद्यार्थियों जैसे वंचित और हाशिए के समूहों की शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन लाने की प्रबल क्षमता रखता है। NEP 2020 में अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning), लचीले और बहु-विषयक पाठ्यक्रम, मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण (Vocational Training) तथा समावेशी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। ये सभी प्रावधान परोक्ष या अपरोक्ष रूप से विद्यार्थियों में जीवन-कौशल के विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों के निरंतर प्रशिक्षण, विशेष परामर्शदाता की नियुक्ति और समुदाय-आधारित सहभागिता के माध्यम से यह नीति एक मजबूत सामाजिक समर्थन तंत्र की वकालत करती है। तथापि, इस नीति की वास्तविक सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि इसके सैद्धांतिक प्रावधानों को जमीनी स्तर पर कितनी संवेदनशीलता, प्रतिबद्धता और पारदर्शिता के साथ क्रियान्वित किया जाता है। आदिवासी क्षेत्रों की भौगोलिक दूरदराज और उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक विविधताओं को ध्यान में रखते हुए स्थानीय स्तर पर योजनाओं का अनुकूलन करना बेहद जरूरी है। पाठ्यपुस्तकों में उनकी लोक-संस्कृति, इतिहास और जीवन-मूल्यों को स्थान देकर ही उनमें अपनत्व की भावना पैदा की जा सकती है। अतः अंततः यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों, विद्यालय-प्रशासन, परिवार, समुदाय और नीति निर्माताओं के समन्वित प्रयासों तथा सतत निगरानी के माध्यम से ही जीवन-कौशल एवं सामाजिक समर्थन आधारित यह दृष्टिकोण सार्थक रूप ले सकता है। जब आंतरिक कौशल और बाहरी समर्थन का यह अनूठा संगम स्थापित होगा, तो आदिवासी विद्यार्थी न केवल अपनी शैक्षणिक उपलब्धि के सर्वोच्च शिखरों को स्पर्श करेंगे, बल्कि वे राष्ट्र निर्माण की मुख्यधारा में पूरी आत्मनिर्भरता, सम्मान और आत्मविश्वास के साथ अपनी प्रभावी भागीदारी भी सुनिश्चित कर सकेंगे।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, एस. के. (2022). *भारतीय शिक्षा में समावेशी दृष्टिकोण और नीतियां*. साहित्यागार प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 45-62।
2. कुमार, मनोज. (2021). आदिवासी विकास, शिक्षा और संस्कृति: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. *जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज*, 15(3), 112-128, <https://doi.org/10.1111/jssh.2021.1534>.
3. गंगोपाध्याय, सुमित. (2023). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: चुनौतियाँ और कार्यान्वयन की दिशा*. रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. 78-95।
4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (2020). विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु जीवन-कौशल शिक्षा मार्गदर्शिका. एनसीईआरटी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 12-30।
5. विश्व स्वास्थ्य संगठन (1997). *विद्यालयों में जीवन-कौशल शिक्षारू दिशा-निर्देश और सिफारिशें*. विश्व स्वास्थ्य संगठन, जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड, पृ. 15-28।
6. सिंह, आर. पी. एवं वर्मा, किरण. (2022). वंचित वर्गों की शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक समर्थन का प्रभाव. *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 48(2), 75-90।
7. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, पृ. 20-35।
8. बेटेइले, ए. (2019). समाजशास्त्रीय निबंध: शिक्षा, समाज और विकास. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 110-135।
9. डेवी, जी. एन. (2018). समकालीन भारत में आदिवासी शिक्षा का संकट. *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 53(14), 45-52।
10. टुडू, एम. (2023). अनुसूचित जनजातियों की शैक्षणिक प्रगति में सामाजिक समर्थन प्रणालियों की भूमिका. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट*, 11(4), 140-155।
11. ओझा, पी. के. (2021). *जनजातीय शिक्षा: समस्याएं और संभावनाएं*. मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ. 50-70।
12. चौधरी, एन. (2020). आदिवासी समाज और आधुनिक शिक्षा प्रणाली. *भारतीय समाजशास्त्र पत्रिका*, 12(1), 45-60।

13. जोशी, बी. एल. (2022). *शैक्षिक मनोविज्ञान और जीवन-कौशल विकास*. वीरांगना प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 85–104।
14. प्रसाद, आर. (2019). *भारत में वंचित समूहों की शिक्षा और विकास*. अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 60–82।
15. मिश्र, वी. के. एवं पाण्डेय, एस. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और समावेशी शिक्षा का स्वरूप. *शिक्षा और समाज*, 29(2), 88–102।
16. शर्मा, के. सी. (2023). *आदिवासी बच्चों का मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य और शिक्षण पद्धतियाँ*. विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 95–115।
17. अम्बेडकर, बी. आर. (2018). *शिक्षा और अनुसूचित जातियाँ*. क्रिटिकल क्वेस्ट, नई दिल्ली, पृ. 30–55।
18. कसाक्सा, वी. (2019). *राज्य, समाज और जनजातियाँ: उत्तर-औपनिवेशिक भारत के मुद्दे*. पियरसन एजुकेशन, नोएडा, उत्तर प्रदेश, पृ. 140–165।
